Research Paper IMPACT FACTOR VALUE : 5.983 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 12 | ISSUE : 2 | FEBRUARY 2026

भारतीय कृषि में आधुनिकीकरण और किसानों की स्थिति के बदलते आयाम

राजेश [1] | डॉ. राजु सिंह [2]

[1] शोधार्थी, विभाग समाजशास्त्र मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर.

[2] (सहायक आचार्य), विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर.

ABSTRACT:

यह अध्ययन भारतीय कृषि में आधुनिकीकरण और किसानों की स्थिति के बदलते आयाम तथा उनसे उत्पन्न समस्याओं को प्रदर्शित करने के लिऐ किया गया है इस अध्ययन में आधुनिकीकरण के बढ़ते प्रभाव तथा उससे भारतीय कृषि में होने वाले परिवर्तनों को स्पष्ट किया गया है तथा वर्तमान समय में इसकी उपयोगिता कहाँ तक अपना महत्वपूर्ण योगदान रखती है का विश्लेषण किया गया है। भारत सरकार द्वारा सहायता के रूप में उठाऐ गऐ महत्वपुर्ण कदमों की जानकारी प्रदान की गई।

KEYWORDS:

आधुनिक तकनीक, कम्प्यूटरीकरण, डिजीटलीकरण, इष्टतम, रिमोट सेंसिंग, आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी, इनपुट, हरित क्रांति, सब्सिडी.

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
25th February 2026	27th February 2026

विषय उपस्थापना–

कृषि आधुनिकीकरण कृषि आधुनिकीकरण से तात्पर्य कृषि क्षेत्र में उत्पादकता, दक्षता और बुनियादी ढ़ाँचे में सुधार के लिए कृषि पद्धतियों में उन्नत तकनीकों और प्रौद्योगिकीयों को लागू करने की प्रक्रिया से है। भारत में कृषि के आधुनिकीकरण से खाद्य सुरक्ष में सुधार हुआ है, किसानों की आय में वृद्धि हुई है और नये रोजगार सृजित हुए है। हालॉकि, किसानों को अभी भी कीमतों में उतार–चढ़ाव, ऋण की कमी और जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

आधुनिकीकरण के लाभ :–

- उत्पादन में वृद्धि : आधुनिक प्रौद्योगिकी ने कृषि उत्पादकता में वृद्धि की है, जिससे किसानों को उन क्षेत्रों में अधिक फसलें उगाने में मदद मिली है, जो पहले शुष्क थे।
- बेहतर खाद्य सुरक्षा : अधिक लोगों को किफायती, पौष्टिक भोजन उपलब्ध होगा।
- जीवन की गुणवत्ता में सुधार : ग्रामीण समुदायों में नई नौकरियां सृजित हुई है।
- फसल की गुणवत्ता में सुधार : फसलों की नई किस्में कीटों और रोगों के प्रति प्रतिरोधी है।

किसानों के लिए चुनौतियाँ :–

- मूल्य अस्थिरता : मूल्य में उतार–चढाव और बाजार सम्पर्क की कमी के कारण किसानों को अनिश्चित लाभ का सामना करना पड़ता है।
- ऋण तक पहुंच का अभाव : किसानों को बैंक ऋण प्राप्त करने में कठिनाई हो सकती है।
- जलवायु परिवर्तन : अविश्वसनीय वर्षा, बाढ़, पाला और ओलावृष्टि फसलों को नुकसान पहुंचा सकती है।
- खराब बुनियादी ढ़ाँचा : भण्डारण और परिवतन की कमी किसानों के लिए बाधा बन सकती है।
- ज्ञान का अभाव : किसानों में आधुनिक तकनीक का उपयोग करने के लिए कौशल और ज्ञान की कमी हो सकती है।

सरकार ने कृषि को आधुनिक बनाने के लिए कदम उठाए है, जिनमं शामिल है :–

- आधुनिक तकनीक के बारे में ज्ञान फैलाने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्रों (केवीके) की स्थापना करना।
- ड्रोन प्रौद्योगिकी के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना।
- प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (पीएसीएस) का कम्प्यूटरीकरण।
- मत्स्य पालन विभाग की स्थापना।

मशीनीकरण :

- आधुनिक उपकरणों का प्रयोग : कार्यकुशलता में सुधार लाने तथा शारीरिक श्रम को कम करने के लिए ट्रैक्टर, हार्वेस्टर तथा अन्य मशीनरी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना।
- इन–सीटू फसल अवशेष प्रबंधन : प्रदूषण को कम करने और मृदा स्वास्थ्य में सुधार के लिए फसल अवशेष प्रबंधन हेतु प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देना।

डिजीटलीकरणः

डिजिटल कृषि मिशन : कृषि में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ब्लॉक चैन और रिमोट सेंसिंग सहित प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए एक सरकारी पहल।

- ई–एनएएम (राष्ट्रीय कृषि बाजार) : कृषि उपज विपणन समितियों (एपीएमसी) के एकीकरण को सुगम बनाने तथा किसानों, खरीददारों और व्यापारियों को जोड़ने के लिए एक डिजीटल मंच।

कृषि का आधुनिकीकरण और आर्थिक विकास

बीसवीं सदी के दौरान, विशेष रूप से इसके उत्तरार्ध में, विश्व ने कृषि उत्पादन

में अभूतपूर्व वृद्धि देखी है। इस उपलब्धि का श्रेय मुख्यतः उन्नत कृषि पद्धतियों को जाता है, जिससे भूमि और श्रम की उत्पादकता में वृद्धि हुई है। हाल ही में व्यापक खेती का योगदान महत्त्वपूर्ण नहीं रहा है। अधिकांश देशों में कृषि के अन्तर्गत अधिक भूमि लाना कठिन होता जा रहा है। चूँकि समृद्ध कृषि को विशेष रूप से कम विकसित देशों में आर्थिक विकास का सबसे महत्त्वपूर्ण आधार माना जाता है, इसलिए उनके लिए एकमात्र व्यवहार्य विकल्प कृषि में भूमि और श्रम की उत्पादकता को निरन्तर बढ़ाना है। दुनिया के कई हिस्सों में कृषि में उत्पादकता में वृद्धि मुख्यतः कृषि के आधुनिकीकरण के माध्यम से प्राप्त की गई है।

आधुनिकीकरण में मुख्यत

उन्नत बीजों, आधुनिक कृषि मशीनरी जैसे ट्रैक्टर, हार्वेस्टर, थ्रेशर आदि, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का जल के साथ इष्टतम संयोजन में उपयोग शामिल है। वर्तमान अध्ययन अल्पविकसित देशों के समग्र आर्थिक विकास में कृषि के आधुनिकीकरण की भूमिका की जाँच करने का प्रस्ताव करता है ताकी इसके बदलते आयाम को समझा जा सके।

यह निम्नलिखित विशिष्ट प्रश्नों पर विचार करता है :–

(क) एल.डी.सी. के आर्थिक विकास में कृषि की क्या भूमिका है?

(ख) कृषि के आधुनिकीकरण का उत्पादकता वृद्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है?

(ग) कृषि के आधुनिकीकरण को बढावा देने के लिए एल.डी.सी. की सरकारें क्या भूमिका निभा सकती है?

भारतीय कृषि के आधुनिकीकरण के कुछ पहलू 1951 में भारत में राष्ट्रीय आर्थिक नियोजन की शुरूआत के बाद से, योजनाकारों द्वारा अर्थव्यवस्था में कृषि विकास की गति को तेज करने के निरन्तर प्रयास किये गये है। हालांकि, नियोजन के प्रारम्भिक चरणों के दौरान मुख्य जोर बुनियादी और पूंजीगत वस्तु उद्योगों के तीव्र विकास के माध्यम से औद्योगिक आधार को व्यापक बनाने पर था। साठ के दशक के मध्य में, जब लगातार दो वर्षों के सूखे के कारण अर्थव्यवस्था को बड़ा झटका लगा तब तीव्र कृषि विकास पर केन्द्रीत विकास रणनीति में बदलाव आवश्यक हो गया।

वास्तव में, लगातार दो वर्षों के सूखे (1965–66 और 1966–67) को प्रभाव इतना गम्भीर था कि इसने एक दशक से अधिक के कृषि विकास के प्रभाव को लगभग समाप्त कर दिया और इसके परिणामस्वरूप एक गम्भीर औद्योगिक मंदी आई। परिणामस्वरूप, योजनाकारों को 1966 से 1969 तक तीन वर्षों की अवधि के लिए 'योजना अवकाश' लेने के लिए मजबूरन होना पड़ा। यह इस अवधि के दौरान था कि कृषि के आधुनिकीकरण और कृषि उत्पादकता म सुधार पर केन्द्रित कृषि विकास की एक नई रणनीति शुरू की गई थी। कृषि के आधुनिकीकरण की यह रणनीति, जिसे व्यापक रूप से 'हरित क्रान्ति' के रूप में जाना जाता है, 1967 से भारतीय अर्थव्यवस्था में जोरदार तरीके से अपनाई गई हो 'हरित क्रान्ति' शब्द कृषि के आधुनिकीकरण के लिए एक पैकेज को इंगित करता है, जिसमें ''कृषि में आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी को बड़े पैमाने पर अनुप्रयोग'' शामिल है। संक्षेप में, हरित क्रान्ति तकनीक के मुख्य घटक है, कई प्रमुख फसलों के लिए उच्च उपज देने वाली बीजों की किस्मों का प्रचलन, ऊर्जायुक्त, कुओं सिंचाई और लिफ्ट सिंचाई सुविधाओं को निर्माण और उपयोग, उर्वरकों और कीटनाशकों की उच्च मात्रा का उपयोग और कृषि उत्पादकता में सुधार के लिए कृषि मशीनरी का व्यापक उपयोग। भरतीय कृषि के आधुनिकीकरण के कुछ पहलुओं की जांच करने के लिए, स्वतंत्रता पश्चात् की अवधि को दो उप–अवधियों में विभाजित करना उपयोगी होगा :–

हरित क्रांति से पहले की अवधि में लगभग 6 प्रतिशत का औसत स्तर देखा गया था। 1980–81 के बाद की अवधि तीसरे चरण का प्रतिनिधित्व करती है, जो भूमि, श्रम और पूंजी की उत्पादकता में एक साथ और महत्वपूर्ण सुधारों की विशेषता है। अस्सी के दशक के दौरान, भूमि उत्पादकता की औसत वार्षिक वृद्धि दर 3.1 प्रतिशत, श्रम उत्पादकता 19 प्रतिश और पूंजी उत्पादकता लगभग 1 प्रतिशत रही है। इस अवधि के दौरान आधुनिकीकरण के पहले चरण के दौरान बनाई गई बुनियादी संरचना औरविकास क्षमता के उपयोग में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। इस प्रकार, उदाहरण के लिए, आर्थिक सर्वेक्षण (भारत सरकार, मार्च 1990) के नवीनतम अंक में यह देखा गया है कि वर्ष 1986–87 और 1987–88 में, सिंचाई क्षमता के उपयोग में उपलब्धि उपयाग के लक्ष्यित स्तर से अधिक थी। आंशिक कारक उत्पादकता पर कृषि के आधुनिकीकरण के प्रभाव की जांच करने के बाद, अब हम कुल कारक उत्पादकता पर इसके प्रभाव की जांच कर सकते है।

आंशिक कारक उत्पादकता (जैसे श्रम उत्पादकता या भूमि उत्पादकता) की वृद्धि उत्पादन के कारकों म बदलाव और तकनकी प्रगति के संयुक्त प्रभाव को इंगित करती है। तकनीकी परिवर्तन के शुद्ध प्रभाव का अनुमान लगाने के लिए, तीन कारक इनपुट अर्थात भूमि, श्रम और पूंजी के भारित औसत के रूप में कुल कारक इनपुट (टीएफआई) का निर्माण करके कारकों में परिवर्तन के प्रभाव को समाप्त करना आवश्यक है। कुल कारक उत्पादकता (टीएफपी), जिसे आम तौर पर तकनीकी प्रगति की सीमा के व्यापक संकेतक के रूप में उपयोग किया जाता है, फिर कृषि में एनडीपी और टीएफआई के बीच अंतर के रूप में प्राप्त किया जाता है। भारतीय कृषि में कुल कारक इनपुट और कल कारक उपात्दकता की वृद्धि दरों के हमारे अनुमान से प्रस्तुत किये गये है जबकि विभिन्न स्त्रोतों द्वारा किये गये विशिष्ट योगदान के संदर्भ में कृषि की समग्र वृद्धि दर दिखाई देती है।

1966–67 से 1988–89 की अवधि के दौरान श्रम निवेश की वृद्धि दर में मामूली गिरावट और भूमि निवेश की वृद्धि दर में उल्लेखनीय गिरावट आई है। हालांकि, पूंजीगत निवेश की वृद्धि 1966–80 की उप–अवधि के दौरान उललेखनीय रूप से तीव्र हुई, जिसके बाद अस्सी के दशक के दौरान इसमें मंदी देखी गई। पटनायक (1987), रथ (1989) और शेट्टी (1990) द्वारा किये गये हालिया अध्ययनों ने अस्सी के दशक के दौरान कृषि निवेश की वृद्धि में मंदी से इस परिघटना का विश्लेषण किया है। इन अध्ययनों से उभरने वाला मुख्य निष्कर्ष यह है कि कृषि में निजी निवेश, सार्वजनिक क्षेत्र के निवेश से प्रभावित होता है और अस्सी के दशक के दौरान सार्वजनिक क्षेत्र के निवेश की वृद्धि में लगातार गिरावट आई है।

व्यक्तिगत कारक इनपुट की वृद्धि में देखी गई प्रवृत्तियों के परिणामस्वरूप विशेष रूप से 80 के दशक के दौरान कृषि में कारक इनपुट की कुल आपूर्ति की वृद्धि में गिरावट आई है। कुल कारक इनपुट की औसत वृद्धि दर 1966–67 से पहले की अवधि के दौरान 1.55 प्रतिशत से घटकर बाद की अवधि में 1.47 प्रतिशत और 1980–81 के बाद की अवधि में 1.20 प्रतिशत हो गई है। इसके विपरीत, हरित क्रांति के बाद की अवधि के दौरान कृषि में एनडीपी की वृद्धि पहले की अवधि की तुलना में काफी तज हो हुई है। शुद्ध कृषि उत्पादन (एनडीपी) की औसत वृद्धि दर 1967 से पहले की अवधि के 1.72 प्रतिशत से बढ़कर बाद की अवधि में 2.36 प्रतिशत और अस्सी के दशक में 27 प्रतिशत हो गई। अस्सी के दशक के दौरान कृषि उत्पादन की वृद्धि में उल्लेखनीय तेजी की इस घटना का विश्लेषण महेन्द्रदेव (1987) के एक हालिया अध्ययन में किया गया है।

महेन्द्रदेव के अध्ययन से यह सामान्य निष्कर्ष निकलता है कि अस्सी के दशक में राज्यों में खाद्यान्न उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है, जिनमें शामिल है :–

इस प्रकार, कृषि विकास का भारतीय अनुभव उच्च विकास दर के कारण उच्च अस्थिरता की परिकल्पना का समर्थन नहीं करता है। वास्तव में, लगातार तीन वर्षों तक खराब मानसून के प्रतिकूल प्रभावों को झेलने की कृषि की क्षमता, जिसकी परिणति 1987–88 के भीषण सूखे के रूप में हुई, खाद्यान्न उत्पादन में कोई बड़ी कमी महसूस किये बिना, स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि अस्सी के दशक के दौरान भारतीय कृषि ने उल्लेखनीय लचीलापन हासिल कर लिया था। यह आंशिक रूप से आधुनिक तकनीक के प्रसार और आंशिक रूप से सिंचाई के सुरक्षात्मक लाभों के कारण प्राप्त हुआ है। धवन (1987) द्वारा किये गये एक हालिया अध्ययन से पता चलता है कि वर्षा के संबंध में उत्पादन लोच, सिंचाई के बिना कम वर्षा वाले राज्यों में 1.6 और मध्यम वर्षा वाले राज्यों में 1.0 से घटकर क्रमशः 0.2 और 0.5 के स्तर पर आ जाती है। इस प्रका, हरित क्रांति द्वारा कृषि उत्पादन वृद्ध में आई तजी ने वास्तव में भारतीय कृषि द्वारा अनुभव की जाने वाली अस्थिरता की मात्रा को कम कर दिया है और इस प्रकार इसे मौसम की स्थिति पर कम निर्भर बना दिया है। शुद्ध कृषि उत्पादन की वृद्धि में उल्लेखनीय तेजी और कुल कारक इनपुट की वृद्धि में एक साथ आई मंदी को देखते हुए यह देखना आश्चर्यजनक नहीं है कि हरित क्रांति के बाद की अवधि में कृषि क्षेत्र में कुल कारक उत्पादकता की वृद्धि में अभूतपूर्वक वृद्धि देखी गई।

यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि हरित क्रांति से पहले की अवधि में टीएफपी लगभग स्थिर था, इसकी औसत वृद्धि दर केवल 0.17 प्रतिशत, 1966–67 से 1980–81 की अवधि के दौरान टीएफपी की औसत वार्षिक वृद्धि दर लगभग 0.9 प्रतिशत तक बढ़ गई और 1980–81 से 1988–89 की अवधि के दौरान यह 2.05 प्रतिशत तक बढ़ गई। इस प्रकार हरित क्रांति की अवधि के दौरान भारतीय कृषि का आधुनिकीकरण प्रमुख तकनकी परिवर्तन लाने में सफल रहा है जैसा कि कृशि क्षेत्र में टीएफपी की उच्च और बढ़ती वृद्धि दर से संकेत मिलता है। भारतीय कृष के समग्र विकास में टीएफसी की वृद्धि का योगदान विकास के स्त्रोतों के विश्लेषण से देखा जा सकता है।

1967 से पहले की अवधि में कृषि एनडीपी की वृद्धि में कुल कारक इनपुट की वृद्धि का 90 प्रतिशत से अधिक योगदान था जबकि टीएफपी की वृद्धि 10 प्रतिशत से भी कम थी। 1966–67 से 1988–89 की अवधि के दौरान यह स्थिति नाटकीय रूप से बदल गई, जिसमें टीएफआई की वृद्धि 51 प्रतिशत और टीएफपी की वृद्धि शुद्ध कृषि उत्पादन की वृद्धि में 49 प्रतिशत के लिए जिम्मेदार थी। वास्वव में, अस्सी के दशक के दौरान, टीएफपी की वृद्धि शुद्ध उत्पादन की वृद्धि में 63 प्रतिशत के लिए जिम्मेदार रही है और परिणामस्वरूप टीएफआई की वृद्धि में गिरावट के बावजूद, कृषि एनडीपी की समग्र वृद्धि में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है।

कृषि क्षेत्र में कुल उत्पादन (टीएफपी) की तीव्र वृद्धि का सामज्ञनय रूप से अर्थव्यवस्था और विशेष रूप से कृषि क्षेत्र की वृद्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना दिलचस्प होगा। हमारे अनुमानों के अनुसार यदि कृषि में कुल उत्पादन (टीएफपी) की वृद्धि इसी दर से हुई होती, तो यह वृद्धि बाद के वर्षों में भी जारी रहती।

यदि 1967 की अवधि में 1967 से पहले की अवधि की तुलना में वास्तविक एनडीपी का स्तर 1988–89 में लगभग 122.3 अरब रूपये कम होता, जो वास्तव में प्राप्त स्तर से 21.9 प्रतिशत की गिरावट दर्शाता है। कृषि एनडीपो के निम्न स्तर का समग्र एनडीपी पर सीधा प्रभाव 1988–89 में इसके स्तर में 9.3 प्रतिशत की कमी के रूप में पड़ता। इसके परिणामस्वरूप 1966–67 से 1988–89 की अवधि के दौरान समग्र अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर 4.3 प्रतिशत प्रति वर्ष के देखे गए स्तर से घटकर 3.9 प्रतिशत हो जाती।

अधिक विशिष्ट रूप से अस्सी के दशक के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था द्वारा अनुभव की गई समग्र आर्थिक वृद्धि में उल्लेखनीय वृद्धि काफी कम हो जाती यदि इस अवधि के दौरान कृषि में कुल कारक उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि नहीं देखी गई होती। यदि 1980–81 से 1988–89 को अवधि के दौरान कृषि में कुल उत्पादक उत्पादकता (टीएफपी) की वृद्धि दर 1967 से पहले की अवधि के समान होती, तो इस अवधि के दौरान अर्थव्यवस्था की समग्र वृद्धि दर 5.5 प्रतिशत प्रतिवर्ष के देखे गए स्तर से घटकर 4.9 प्रतिशत प्रति वर्ष हो जाती। इस प्रकार, कृषि में कुल उत्पादक उत्पादकता (टीएफपी) वृद्धि में तेजी ने अस्सी के दशक के दौरान अर्थव्यवस्था के समग्र विकास में तेजी लाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

कृषि के आधुनिकीकरण में सरकार का महत्वपूर्ण योगदान :–

कृषि क्षेत्र के विकास के लिए सरकारी हस्तक्षेप अधिकांश अल्पविकसित देशों में एक सामान्य विशेषता है। भारत में, सरकार ने सामान्य रू॰ से कृषि विकास और विशेष रूप से इसके आधुनिकीकरण को बढ़ावा देने में प्रमुख भूमिका निभाई है। भारतीय कृषि में सरकारी हस्तक्षप के विभिन्न पहलुओं में से निम्नलिखित दो पहलू विशेष रूप से उल्लेखनीय है : (क) मूल्य समर्थन/खरीद नीति के माध्यम से बाजार तंत्र में प्रत्यक्ष हस्तक्षेप : और (ख) प्रमुख कृषि साधनों पर सब्सिडी। भारत सरकार कई कृषि वस्तुओं के लिए उनके खरीद/समर्थन मूल्य निर्धारित करके प्रशासित मूल्य नीति का पालन करती है। सरकार प्रत्येक फसल के लिए प्रत्येक मौसम के लिए खरीद या न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा करती है और सार्वजनिक, सहकारी और अन्य राज्य प्रायोजित एजेंसियों के माध्यम से तदनुरूप खरीद या मूल्य समर्थन कार्यों की व्यवस्था भी करती है। कृषि मूल्य निर्धारण में कृषि साधनों की लागत, बाजार मूल्यों का रूझान, अंतर फसल मूल्य समता आदि जैसे विभिन्न कारकों को ध्यान में रखा जाता है। अब यह सर्वविदित है कि सरकार की मूल्य नीति ने किसानों को बाजार की अनिश्चितताओं से बचाने में महत्त्वपर्ण भूमिका निभाई है और यह उच्च उपज वाली किस्मों को अपनाने को प्रोत्साहित करने में भी सहायक रही है, जिसने आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को गति देन में योगदान दिया है। भारत में चयनित कृषि वस्तुओं के न्यूनतम समर्थन/खरीद मूल्यों की जानकारी सरकार द्वारा दी जा रही है।

यह स्पष्ट है कि 1980–81 से 1988–89 की अवधि के दौरान विभिन्न कृषि वस्तुओं के लिए सरकार द्वारा घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्यों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। यह देखना दिलचस्प है कि प्रशासित मूल्यों के रूप में सरकारी हस्तक्षेप आर्थिक दक्षता की कीमत पर नहीं रहा है। हाल के एक अध्ययन में गुलाटी (1989) ने दिखाया है कि अस्सी के दशक के दौरान गेहूं, चावल और कपास के उत्पादन को बढ़ाने के उद्देश्य से निवेश कार्यक्रमों में संभावना है, जिस सीमा तक व्यक्तिगत किसान वास्तव में आधुनिक कृषि इनपुट का उपयोग करते । इसलिए भारत में सरकार ने आधुनिक कृषि इनपुट पर विशिष्ट सब्सिडी के रूप में किसानों को कई तरह के प्रोत्साहन प्रदान रने की नीति अपनाई। इस प्रकार किसानों को रासायनिक उर्वरकों, सिंचाई सुविधाओं और बिजली के उपयोग को प्रोत्साहित करने और ऋण सुविधाओं का लाभ उठाने के लिए सब्सिडी प्रदान की गई है। अशोक गुलाटी (1989।)

अनुसंधान पद्वति–

क. अध्ययन पद्वति– इसमें व्याख्यात्मक एवं वर्णात्मक विधि का प्रयोग किया गया है

ख. आकड़ो का सन्ग्रह –

शोध से संबंधित तथ्य प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोत्र से संकलित किए गया तथ्य संकलन एवं प्रक्रियाकरणः तथ्य संकलन में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोत्र का सहारा लिया गया।प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु साक्षात्कार तथा अवलोकन प्रविधि का प्रयोग किया गया। साक्षात्कार अनुसूची के निर्माण हेतु सर्वप्रथम अध्ययन की समस्या एवं विषय वस्तु से संबंधित विभिन्न शोध अध्ययनों एवं अन्य विषय सामग्री के अध्ययन के बाद उपयोगी तथ्यों को एकत्रित किया गया।

द्वितीयक स्त्रोत्रः–

शोध विषय से संबंधित द्वितीयक स्त्रोत्र एवं सामग्री का संग्रहण विभिन्न शोध पत्रिकाओं, पुस्तकालय दैनिक पत्र–पत्रिकाओं एवं इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री से किया गया। प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध ग्रंथ, विभिन्न सरकारी आंकड़े, एवं किसानों से संबंधित योजनाओं का आकलन किया गया।

निष्कर्ष–

उपरोक्त विवेचना के आधार पर स्पष्ट किया गया है कि भारत एक विकासशील देश है जिसकी अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है अतः कृषि में आधुनिकता अपना एक विशेष महत्व रखती है। आधुनिकता ने भारतीय कृषि ने प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया हैं।जिसके परिणाम स्वरूप भारतीय कृषि का स्वरूप बदलता जा रहा हैं। इसमें भारतीय किसानों की जीवन शैली में परिवर्तन ला दिया हैं इस परिवर्तन के सकारात्मक व नकारात्मक दोनों परिणाम प्राप्त हो रहे है। भारतीय सरकार द्वारा किसानो की सहायता हेतू विभिन्न प्रकार की योजनाओं का संचालन किया जा रहा है। आधुनिकीकरण ने कृषि को बहुत बढ़ावा दिया हैं साथ ही इसके कुछ दुष्परिणाम भी उभर कर सामने आ रहे।

REFERENCES

1. बसंत राकेश (1987): "भारत में कृषि प्रौद्योगिकी और रोजगार: हालिया शोध का एक सर्वेक्षण", आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, खंड 22, अंक 32, 8 अगस्त।

2. भल्ला, जी.एस. और त्यागी, डी.एस. (1989): ''भारतीय कृषि विकास में पैटर्न: एक जिला स्तरीय अध्ययन, नई दिल्ली: औद्योगिक विकास अध्ययन संस्थान।

3. चढ्ढ़ा, ओ.के. और खुराना, एम.आर. (1989): ''पिछड़ा कृषि, अप्रतिफल श्रम और आर्थिक अभावः बिहार का पंजाब के साथ विरोधाभास", आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, खंड 24, अंक 47, 25 नवम्बर। सीएसएससी (1974): ''हरित क्रान्तिः अधूरा कार्य", कलकत्ताः मिनर्वा एसोसिएट्स।

4. धनागुरे, डी.एन. (1987): ''ग्रामीण भारत में हरित क्रान्ति और सामाजिक असमानताएँ, इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, खंड 22, अंक 19-21, वार्षिक अंक, मई। धवन, बी.डी. (1987): ''भारत में सिंचित कृषि कितनी स्थिर है?'' इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, खंड 22, अंक 39, सितम्बर।

5. गुलाटी, अशोक (1989): ''भारतीय कृषि में प्रभावी प्रोत्साहनों की संरचना: कुछ नीतिगत निहितार्थ, 'इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, खंड 24, अंक 39, सितम्बर।

6. (1989।): ''भारतीय कृषि में इनपुट सब्सिडी: एक राज्यवार विश्लेषण'', आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, खण्ड 24, अंक 25, जून।

7. महेन्द्रदेव, एस. (1987): ''विकास महेन्द्रदेव, एस.(1987): ''खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि और अस्थिरता: एक अंतर-राज्यीय विश्लेषण'', आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, खंड 22, संख्या 39, 26 सितम्बर।

8. मृत्युंजय और कुमार, पी. (1989): ''फसल अर्थशास्त्र और फसल पैटर्न परिवर्तन'', आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, खंड 24, संख्या 51-52, 23-30 दिसम्बर।

9. पटनायक, प्रभात (1987): ''भारतीय अर्थव्यवस्था का हालिया विकास अनुभव: कुछ टिप्पणीयाँ, ''आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, वार्षिक अंक, खण्ड 22, संख्या 19-21, मई।

10. रथ, नीलकंठ (1989): ''भारत में कृषि-सांस्कृतिक विकास और निवेश'', जर्नल ऑफ इंडियन स्कूल ऑफ पॉलिटिकल इकोनॉमी। खंड 1, अंक 1, जनवरी-जून।

11. सत्या, पॉल (1989): ''हरूआमा में कृषक परिवारों में हरित क्रान्ति और आय वितरण। 1969-70 से 1982-83 तक।'' इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, खंड 24, संख्या 51-52। 23-30 दिसम्बर।

12. शेट्टी, एस.एल. (1990): ''कृषि में निवेश - हाल के रूझानों की संक्षिप्त, ''आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, खंड 25, संख्या 7 और 8, 17-24 फरवरी।